



SHRI MULCHAND LODHA

Shri Mulchand Lodha is a famous social activist from Rajasthan, who has devoted his entire life for the welfare of poor and tribal people.

2. Born on 15th March, 1948 in Amet of Rajsamand district, Shri Lodha completed his B.A.-B.Ed. Degree from Mumbai. He had inclination for social service especially for the poor, the destitute and needy people from his student life. He joined RSS and worked for the expansion of its activities in various regions in the capacity of Zila Pracharak. He encouraged the volunteers of RSS to serve the needy people.

3. Shri Lodha was moved to see the condition of tribal people of Dungarpur and Pali districts. When he came to Pali district as its Zila Pracharak, he worked for the betterment of the Garasia tribe of Gorla – Bhimana area of Pali district. When there was a massive famine in that area, he organized activities on massive scale on food and medicine distribution, animal camps, fodder centre, etc.

4. Shri Lodha was made, “Pradesh Sangathan Mantri” of “Seva Bharati” the largest NGO of Rajasthan, in 1990 by RSS recognizing his social works. In this capacity, Sh. Lodha organized several training workshops for the RSS volunteers, wherein they were trained for service to the poor and backward tribal people. He established Jagaran Jan Seva Mandal in 2000 in a small village Majhola in Dungarpur to serve the tribal people. Later, he shifted his workplace to Vagdari, where the state government granted land for this organization. He also started working for the poor orphan children by providing them food, free education etc. Around 300 such children have been benefited with free education.

5. Shri Lodha started, “Acharya Mahapragya Eye Hospital”, in Vagdari 2004. Around 1,25,000 patients of tribal area have got benefits through 315 eye camps. More than 18000 eye operations have been successfully conducted. He started School for the poor tribal families in 2005. In 2008, he introduced a Dining Hall for the students, patients and Social workers.

6. Shri Lodha, even at the age of 75 is still serving the poor and the needy people with the same enthusiasm, vigor and zest.



श्री मूलचन्द लोढ़ा

श्री मूलचंद लोढ़ा राजस्थान के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन निर्धन और जनजातीय लोगों के कल्याण के प्रति समर्पित कर दिया है।

2. 15 मार्च, 1948 को राजसमंद जिले के आमेत में जन्मे, श्री लोढ़ा ने मुंबई से बी.ए., बी.एड. डिग्री प्राप्त की। छात्र जीवन से ही उनकी समाज, विशेषकर गरीब, निराश्रित और जरूरतमंद लोगों की सेवा के प्रति रुचि थी। वह आरएसएस में शामिल हो गए और जिला प्रचारक के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में इसकी गतिविधियों के विस्तार के लिए कार्य किया। उन्होंने आरएसएस के स्वयंसेवकों को जरूरतमंद लोगों की सेवा के लिए प्रेरित किया।

3. श्री लोढ़ा डूंगरपुर और पाली जिलों की जनजातियों की स्थिति देखकर द्रवित हो गए। जब वह पाली के जिला प्रचारक बनकर आए तब उन्होंने पाली जिले के गोरिया—भीमाना क्षेत्र के गरसिया जनजाति की बेहतरी के लिए कार्य किया। जब उस क्षेत्र में भयानक अकाल पड़ा, तब उन्होंने बड़ी मात्रा में खाद्य पदार्थ, दवाओं का वितरण, पशुओं के लिए कैंप, चारा केंद्र आदि जैसी गतिविधियों का आयोजन किया।

4. उनके सामाजिक कार्यों के सम्मानस्वरूप, आरएसएस ने श्री लोढ़ा को 1990 में “सेवा भारती”, राजस्थान के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन, का “प्रदेश संगठन मंत्री” बनाया। इस पद पर रहते हुए, श्री लोढ़ा ने आरएसएस के स्वयंसेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया, जिसमें निर्धनों और पिछड़े लोगों की सेवा का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने जनजातीय लोगों की सेवा के लिए वर्ष 2000 में डूंगरपुर जिले के एक छोटे से गांव मझोला में जागरण जन सेवा मण्डल की स्थापना की। बाद में, उन्होंने वागदारी को अपना कार्यस्थल बनाया, जहां राज्य सरकार ने उन्हें इस संस्था के लिए भूमि प्रदान की। उन्होंने भोजन, मुफ्त शिक्षा, आदि प्रदान करके गरीब और अनाथ बच्चों के लिए भी काम करना शुरू किया। मुफ्त शिक्षा से ऐसे लगभग 300 बच्चों को लाभ हुआ है।

5. श्री लोढ़ा ने वर्ष 2004 में वागदारी “आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय” शुरू किया। 315 नेत्र चिकित्सा कैंपों के माध्यम से जनजातीय इलाकों के लगभग 1,25,000 मरीजों को लाभ हुआ है। 18000 से अधिक नेत्र ऑपरेशन सफलतापूर्वक किए गए हैं। उन्होंने वर्ष 2005 में निर्धन जनजातीय परिवारों के लिए विद्यालय शुरू किया। वर्ष 2008 में, उन्होंने छात्रों, मरीजों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भोजशाला की शुरुआत की।

6. श्री लोढ़ा 75 वर्ष की आयु में भी उत्साह, ऊर्जा और जब्बे के साथ निर्धन और जरूरतमंद लोगों की सेवा कर रहे हैं।